

डॉ. क्रेग कीनर, अधिनियम, व्याख्यान 2, शैली और इतिहासलेखन

© 2024 क्रेग कीनर और टेड हिल्डेब्रांट

यह एक्ट्स की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. क्रेग कीनर हैं। यह सत्र 2, शैली और इतिहासलेखन है।

विद्वानों ने अधिनियमों की पुस्तक के लिए कई शैलियों या साहित्यिक प्रकारों का प्रस्ताव दिया है।

जिस पर हमने गौर किया है वह जीवनी है, और उस प्रस्ताव में कई उपयोगी तत्व हैं। एक अन्य प्रस्ताव और यह बहुत अधिक विवादास्पद रहा है, यह प्रस्ताव है कि एक्ट्स एक उपन्यास है, जो मुख्य रूप से रिचर्ड पेरवो द्वारा प्रस्तावित है। अब वास्तव में, पेरवो आज नहीं कहेगा, वह वास्तव में कभी नहीं कह रहा था कि एक्ट्स एक उपन्यास था।

वह केवल उपन्यासों के साथ तुलना कर रहे थे और एक्ट्स को एक विशिष्ट ऐतिहासिक कार्य के बजाय एक लोकप्रिय स्तर के कार्य के रूप में पहचान रहे थे। इसलिए, उन्होंने इसे एक प्रकार की औपन्यासिक इतिहासलेखन के रूप में देखा। लेकिन किसी भी मामले में, उपन्यास के प्रस्ताव को देखते हुए, क्योंकि कई लोगों ने उनके मूल तर्क को लिया है और कहा है, ठीक है, शायद एक्ट्स एक उपन्यास है या हमें इसे एक उपन्यास के रूप में पढ़ना चाहिए।

उनका एक तर्क यह है कि ल्यूक अपने विरोधियों का व्यंग्यचित्र बनाता है, और उन्हें वास्तव में बुरा दिखाता है। ठीक है, कुछ लोग वास्तव में बुरा व्यवहार करते हैं, लेकिन किसी भी मामले में, भले ही ल्यूक उनका चरित्र-चित्रण कर रहा हो, इससे यह उपन्यास नहीं बनेगा, क्योंकि यह सभी विवादों की विशेषता थी। मेरा मतलब है, टैसिटस, यदि प्राचीन काल में कोई इतिहासकार था, तो वह टैसिटस था।

लेकिन आपने देखा कि टैसिटस नीरो और डोमिनिशियन के साथ कैसा व्यवहार करता है। नीरो या डोमिनिशियन के बारे में जो भी बुरी अफवाह थी, वह टैसिटस के काम में समाप्त होती है। लोग दिए गए दृष्टिकोण से लिखते हैं।

पेरवो उपद्रवी भीड़ का हवाला देता है। वे कहते हैं, वे उपन्यासों में दिखाई देते हैं, लेकिन वे प्राचीन इतिहासलेखन में भी हर जगह दिखाई देते हैं। प्राचीन काल में बहुत सारी उपद्रवी भीड़ें थीं और हम उन्हें ऐतिहासिक कार्यों में उपन्यासों से कम नहीं पाते हैं।

कभी-कभी वह बाद के ईसाई कृत्यों, पॉल और थेक्ला के कृत्यों, पीटर के कृत्यों, जॉन के कृत्यों, जो कि मेरा व्यक्तिगत पसंदीदा है, और कई अन्य के लिए अपील करता है। लेकिन यह ल्यूक के कृत्यों से व्युत्पन्न है। वस्तुतः हर कोई इस बात से सहमत है कि ल्यूक के कृत्य पहले के हैं, इसलिए हम वास्तव में बाद के कृत्यों को इसमें नहीं पढ़ सकते हैं।

वास्तव में, वे बाद वाले उपन्यासों के उत्कर्ष काल, दूसरी शताब्दी के अंत और तीसरी शताब्दी के प्रारंभ से आते हैं। ल्यूक का गॉस्पेल ऐसा नहीं करता है, और रिचर्ड पेर्वो ने स्वयं इसकी तारीख इतनी देर से नहीं लिखी है। इसके अलावा, प्राचीन उपन्यास आमतौर पर रोमांस होते थे।

आप कह सकते हैं, ठीक है, जॉन के कार्य नहीं थे, कुछ अन्य के। अक्सर इनमें से कुछ बाद के कृत्य, ईसाई कृत्य होते हैं, क्योंकि प्राचीन काल के लेखन में कुछ हलकों में रोमांस की तुलना में ब्रह्मचर्य को अधिक महत्व दिया जाता था। इन बाद के कृत्यों को देखते हुए, पॉल और थेक्ला के कृत्यों की तरह, वहां की प्रमुख महिला पात्र अपने पति को छोड़ देती है और ब्रह्मचारी बन जाती है। वह पॉल के पीछे-पीछे घूमती है, लेकिन वह उसकी दुल्हन या ऐसा कुछ नहीं बनती है।

लेकिन प्राचीन उपन्यास आमतौर पर रोमांस होते थे। उपन्यास ऐतिहासिक चरित्रों के बारे में बहुत कम होते थे।

उनमें से कुछ हैं। ज़ेनोफॉन का साइरोपेडिया पहले के काल का है, और बाद के काल का हमारे पास किसी ऐसे व्यक्ति का काम है जिसे हम स्यूडो-कैलिस्थनीज़ कहते हैं। यह वास्तव में कैलिस्थनीज़ नहीं था, जो अलेक्जेंडर का रोमांस लिख रहा था। वह किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में लिखा गया था जो 500 साल पहले जीवित था। यह कम से कम 500 साल पहले की ऐतिहासिक जानकारी पर निर्भर नहीं है। लेकिन वे कभी-कभार ही ऐतिहासिक पात्रों के बारे में थे, और जहां तक मैंने देखा है, कभी भी, किसी भी हाल के पात्रों के बारे में नहीं थे।

जब आप हाल के पात्रों के बारे में लिख रहे हैं, तो मेरा मतलब है, लोगों ने हाल के पात्रों, पिछली पीढ़ी या दो के बारे में उपन्यास नहीं लिखे हैं। तो, आपके पास पहली शताब्दी से यीशु के बारे में कोई उपन्यास नहीं होगा। आपके पास पॉल के बारे में पहली शताब्दी का कोई उपन्यास नहीं होगा, या यदि आप इसे इतनी देर से, दूसरी शताब्दी की शुरुआत से लिखना चाहें तो भी नहीं होगा।

इतिहास और जीवनी के विपरीत, जहां इतिहास को प्रत्यक्षदर्शियों या समकालीनों द्वारा लिखा गया सबसे अच्छा माना जाता था, यह सब उस तरह से नहीं लिखा गया था, लेकिन इतिहास हाल के पात्रों के बारे में लिखा जा सकता था। उपन्यास नहीं थे। उपन्यासों में इतिहास के साथ वह व्यापक पत्राचार शामिल नहीं होगा जो हमें अधिनियमों की पुस्तक में मिलता है।

और गंभीरता से, ये अलग-अलग शैलियाँ हैं। कथाओं में काल्पनिकता कहानियों और उपन्यासों तक ही सीमित थी। इतिहासकारों ने इसकी आलोचना की थी।

इतिहासकारों को ऐसा करने की अनुमति नहीं थी। तो, ल्यूपियन, पॉलीबियस, जब वह तिमाईस की आलोचना कर रहे थे, उन्होंने उन लोगों की आलोचना की, जिनमें बहुत सारी त्रुटियाँ थीं, भले ही आज कई विद्वान कहेंगे, ठीक है, जब हम पंक्तियों के बीच पढ़ते हैं, तो तिमाईस वास्तव में उतना बुरा इतिहासकार नहीं था, जितना कि पॉलीबियस होने का आरोप लगाया। हो सकता है कि पॉलीबियस इस प्रतिस्पर्धा से कुछ छुटकारा पाने की कोशिश कर रहा हो।

लेकिन किसी भी मामले में, ऐतिहासिक कार्यों में इसकी आलोचना की गई थी। इसके अलावा, आपके पास उपन्यासों में कोई ऐतिहासिक प्रस्तावना, ऐतिहासिक प्रस्तावना नहीं है जैसा कि आप ल्यूक 1:1-4 में करते हैं, या स्रोतों का उपयोग उस तरह से नहीं है जैसा हमारे यहाँ है। मैं एक उपन्यास, एपुलियस मेटामोर्फोसिस के बारे में जानता हूँ, जो ल्यूपियन के लुसियस में पाई गई पुरानी कहानी को दोहराता हुआ प्रतीत होता है।

लेकिन यह एक उदाहरण है जिसे मैं स्रोतों के उपयोग के बारे में जानता हूँ, और इसे बहुत स्वतंत्र रूप से फिर से लिखा गया था। यह स्पष्टतः एक उपन्यास था। यह स्पष्ट रूप से एक ऐतिहासिक कार्य नहीं था, ल्यूक-एक्ट्स में हमारे पास जो है उसके विपरीत।

इसके अलावा, विभिन्न स्रोतों पर ल्यूक के चित्रण के संबंध में, वह अपने स्रोतों को एक साथ रखने के तरीके में बहुत सावधान दिखता है। यह ल्यूक के सुसमाचार में कोई पाठ्यक्रम नहीं है, लेकिन आप सुसमाचार के सारांश का उपयोग करके देख सकते हैं। यदि आपने अन्य प्राचीन जीवनियों का सारांश बनाया है, तो आप देखेंगे कि सारांशित गॉस्पेल वास्तव में प्राचीन मानकों के अनुसार एक-दूसरे के काफी करीब हैं, जिससे पता चलता है कि उनका वास्तव में ऐतिहासिक जानकारी प्राप्त करने का इरादा था।

अब, ऐतिहासिक प्रस्तावना के संदर्भ में, उपन्यासों में वह बात नहीं थी। कभी-कभी कुछ विद्वानों ने एक अपवाद का हवाला दिया है, और वह अपवाद लॉगस, डैफनीस और क्लोट का एक उपन्यास है। लेकिन अगर आप उस उपन्यास की प्रस्तावना पढ़ेंगे, तो वह बिल्कुल भी ऐतिहासिक प्रस्तावना नहीं है।

इसमें कहा गया है कि मैंने इस तरह से कहानी बनाई है। तो, बहुत अलग शैलियाँ। रिचर्ड पेर्वो ने यह भी बताया है कि आपके पास उपन्यासों की तरह कई साहसिक कार्य हैं।

खैर, आपके इतिहास में रोमांच भी हैं। मेरा मतलब है, जोसेफस की आत्मकथा पढ़ें। निश्चित रूप से, यह रोमांच से भरपूर है।

जोसेफस का युद्ध या थ्यूसीडाइड्स का पेलोपोनेसियन युद्ध का विवरण पढ़ें। जाहिर है, वहाँ रोमांच हैं क्योंकि यह युद्ध के बारे में लिख रहा है। अब, माना कि, जब मैंने पहली बार थ्यूसीडाइड्स के पेलोपोनेसियन युद्ध को पढ़ने की कोशिश की, तो मुझे लगता है कि मैं 14 साल का था, और मुझे यह उतना दिलचस्प नहीं लगा जितना अब लगता है।

लेकिन मुझे कुछ अन्य काम भी मिले। जब मैं 12 साल का था तो मुझे टैसिटस काफी दिलचस्प लगा। इसलिए, इतिहास में दिलचस्प रोमांच भी शामिल हो सकते हैं।

टायर के मैक्सिमस का कहना है कि इतिहास आनंददायक है और इसे मनोरंजन के अन्य रूपों के बदले भोज में भी पढ़ा जा सकता है, कम से कम यदि आपके पास बुद्धिजीवी मौजूद हों। अब, यह लोकप्रिय इतिहासलेखन में विशेष रूप से सच होगा। और यहीं पर मुझे लगता है कि रिचर्ड पेर्वो के पास एक मूल्यवान अंतर्दृष्टि है क्योंकि यह विशिष्ट इतिहासलेखन में आपके पास मौजूद

विवरणों की तुलना में कम कठिन अन्य प्रकार के विवरणों के साथ अधिक साहसिक तरीके से लिखा गया है।

ऐतिहासिक मोनोग्राफ में कथानक भी होते थे ताकि उनमें एक सामान्य विषय, एक सामान्य कहानी हो जिसे वे बता रहे थे। अरस्तू ने किसी भी प्रकार की कथा के लिए कथानक के महत्व के बारे में बात की। रोमांच में यह रुचि सभी प्राचीन साहित्यिक आख्यानों की विशेषता थी, हालाँकि आप इसे कुछ प्रकारों में दूसरों की तुलना में अधिक पाते हैं।

लेकिन अधिनियमों में कितना होना चाहिए था? पॉल के कारनामों का वर्णन करने में कितना कुछ होना चाहिए था? ठीक है, यदि आप 2 कुरिन्थियों 11 पढ़ते हैं, यदि कुछ भी हो, तो ल्यूक ने पॉल के कारनामों को कम कर दिया क्योंकि ल्यूक के पास बताने के लिए जितनी जगह है उससे कहीं अधिक पॉल के पास था। वह तो केवल नमूने देता है। एक्ट्स की किताब में प्रमुख साहसिक कार्यों में से एक, पॉल को भागने के लिए एक दीवार से नीचे उतार दिया जाता है।

पॉल ने 2 कुरिन्थियों 11 में इसका उल्लेख किया है। पॉल ने जहाजों के मलबे का उल्लेख किया है जो अधिनियमों में कहीं भी दिखाई नहीं देता है। अधिनियम 2 कोरिंथियों के लिखे जाने के बाद एक जहाज़ के मलबे का वर्णन करता है।

लेकिन पॉल कई बार जहाज़ बर्बाद होने की बात करता है। वह कई बार आराधनालयों में पीटे जाने की बात करता है। वह कई बार डंडों से पीटे जाने की बात करता है, भले ही एक्ट्स उनमें से केवल एक का वर्णन करता है।

इसलिए, एक्ट्स पॉल के कारनामों पर ज़ोर नहीं दे रहा है। यह वास्तव में, अगर कुछ भी है, तो उनमें से कम को दोबारा गिनना है, हालाँकि यह कुछ को अधिक विस्तार से गिनता है जितना पॉल के पास करने का कारण होगा। रिचर्ड पेर्वो बात करते हैं, ठीक है, हेलेनिस्टिक उपन्यासों में आपके जैसा एक नायक है।

ठीक है, लेकिन आपकी सकारात्मक जीवनियों में भी एक नायक है। जीवनियाँ सकारात्मक या नकारात्मक हो सकती हैं। आमतौर पर, वे मिश्रित होते थे।

उनमें सकारात्मक और नकारात्मक विशेषताएं थीं। लेकिन अगर आप किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में लिख रहे थे जिसका आप वास्तव में सम्मान करते थे, जैसे कि जब टैसिटस अपने ससुर एग्रीकोला के बारे में लिखता है, तो यह बहुत सकारात्मक था। लेकिन आपके पास अक्सर एक हीरो होता था।

आपकी कई जीवनियों में निश्चित रूप से एक नायक था। रिचर्ड पेरवो ने जो बताया है उसमें एक उपयोगी तत्व है, और वह यह है कि ल्यूक दिलचस्प कहानी कहने की तकनीकों का उपयोग करता है। लेकिन आप इतिहासलेखन में समान कथा तकनीकों का उपयोग कर सकते हैं, खासकर लोकप्रिय स्तर पर।

मेरी पत्नी 18 महीने तक युद्ध शरणार्थी रही, और हमने एक किताब लिखी है। यह अभी तक रिलीज़ नहीं हुआ है, लेकिन जिस समय इसे फिल्माया जा रहा है, हो सकता है कि जब आप इसे देख रहे हों तब तक यह रिलीज़ हो जाए। लेकिन हमने इसके बारे में एक किताब लिखी।

किताब में ढेर सारा रोमांच, ढेर सारा एक्शन और थोड़ा रोमांस है। यह मेरी पत्नी है। लेकिन इसमें से कुछ भी काल्पनिक नहीं है।

ऐसे कुछ बिंदु थे जहां, जगह की खातिर, बस कुछ बार, मैंने अलग-अलग बिंदुओं पर कालानुक्रमिक रूप से घटित चीजों को मिश्रित किया। मैंने उन्हें एक दृश्य में एक साथ मिश्रित कर दिया। वह तो बस कुछ बिंदु थे।

लेकिन ये बातें सीधे उनकी पत्रिका और मेरी पत्रिका से ली गई थीं। ये वास्तविक घटनाएँ थीं। लेकिन जिस तरह से आप उन्हें बताते हैं, मैंने उन चीज़ों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए पत्रिका में मौजूद बहुत सी चीज़ें छोड़ दीं, जिनमें पाठकों की सबसे अधिक रुचि होगी।

उस अवधि के कुछ समय के लिए मेरी पत्रिकाएँ फ़ाइल कैबिनेट की दो दराजें भर सकती हैं। और यह किताब छोटी होनी चाहिए थी इसलिए इसे सस्ते में बेचा जा सकता था। प्रकाशक ने यही माँगा था।

इसलिए वहां बहुत ही कम मात्रा में जानकारी है, लेकिन मैं अपनी रुचि के आधार पर जानकारी का चयन कर सकता हूँ। खैर, इससे यह उपन्यास नहीं बन जाता। यह अभी भी जीवनी है।

यह अभी भी ऐतिहासिक रूप से सत्य है। लेकिन रुचियाँ उसके लिखे जाने के तरीके को आकार देती हैं। और यह प्राचीन काल में जितना सत्य था, आज से उतना कम सत्य नहीं है।

वास्तव में, मैं इसे बहुत कम लोकप्रिय ऐतिहासिक शैली में लिख सकता था। हमारे पास सभी तारीखें और पत्रिकाओं से सब कुछ था, लेकिन यह सब ठीक है। दूसरों ने सुझाव दिया है कि अधिनियमों की पुस्तक एक महाकाव्य है।

मैरिएन बोटज़ ने सुझाव दिया कि यह एक गद्य महाकाव्य है। एक्ट्स की गद्य महाकाव्य से तुलना करने में समस्या यह है कि ऐसी कोई शैली मौजूद नहीं थी। महाकाव्य गद्य में नहीं, पद्य में लिखे गए।

और आपको यह समझने से पहले ग्रीक में ल्यूक के अधिनियमों को अधिक पढ़ने की ज़रूरत नहीं है कि, अंग्रेजी की तरह, अधिनियम काव्यात्मक रूप में नहीं लिखे गए हैं। यह गद्य है। इसके अलावा, महाकाव्य सामान्यतः सुदूर अतीत से संबंधित होते हैं।

खैर, एक्ट्स हाल की अतीत, हाल की पीढ़ियों से निपट रहा है। सुदूर अतीत सदियों पहले का होगा। अक्सर ये किंवदंतियाँ थीं, और कभी-कभी ये शुद्ध मिथक, रोमन साम्राज्य के महाकाव्य थे।

आपके पास है, जैसा कि पहली शताब्दी के उत्तरार्ध में हुआ था, हालाँकि बॉटज़ के काम में यह प्राथमिक अपील नहीं है। वह मुख्य रूप से वर्जिल के एनीड से अपील करती है। लेकिन आपके पास कुछ और हालिया युद्ध भी हैं, यहां तक कि गृहयुद्ध भी।

उदाहरण के लिए, आपके पास ल्यूकन या अन्य लोग हैं, जो युद्ध को काव्यात्मक रूप देते हैं और फिर इसे एक महाकाव्य की तरह बनाते हैं, और सेना के ऊपर खड़ी विशाल युद्ध देवी के साथ अतिरंजित विशेषताएं रखते हैं, इत्यादि। लेकिन एक्ट्स ऐसा कुछ नहीं है। अधिनियम, फिर से, काव्यात्मक रूप में नहीं लिखा गया है।

हालाँकि, बॉटज़ के तर्क में एक संभवतः उपयोगी तत्व है, और वह यह है कि एक्ट्स एक आधार कहानी है। यह सुदूर अतीत के बारे में नहीं हो सकता है, लेकिन यह उस विरासत के बारे में बात कर रहा है जो इन प्रथम प्रेरितिक नेताओं द्वारा छोड़ी गई थी। तो, इसका मतलब यह नहीं है कि हम उससे कुछ नहीं सीख सकते, लेकिन गद्य महाकाव्य मौजूद नहीं था।

हमने थीसिस के बारे में बात की कि यह जीवनी है। शायद निकटतम समानांतर डायोजनीज लैर्टियस होगा, जिसने बाद में लिखते हुए, कई लोगों की जीवनियाँ लिखी हैं। आपके पास फिलोस्टेटस की लाइव्स ऑफ द सोफिस्ट्स भी है, जिसमें कई लोगों की जीवनियाँ एक साथ जुड़ी हुई हैं।

आपके पास समानांतर जीवन भी हैं, जहां आपके पास कई खंड हैं, जहां एक खंड एक आकृति से संबंधित है, दूसरा खंड दूसरे आंकड़े से संबंधित है, और जिस जानकारी के बारे में आप बात करने जा रहे हैं उसे सीमित करने के लिए, आप उनकी एक दूसरे से तुलना करेंगे। तो, आपके पास यीशु, पीटर और पॉल हैं। लेकिन फिर आप अधिनियम 6-8 के साथ क्या करते हैं, जो स्टीफन और फिलिप पर केंद्रित है, या 9-12 पर भी, जहां यह पीटर और पॉल के बीच आगे-पीछे होता है? इसलिए, मैंने तर्क दिया है कि यह वास्तव में इतिहास का एक जीवनी संबंधी दृष्टिकोण है।

इतिहास लोगों की कार्यप्रणाली या कृत्यों से संबंधित है। यहीं पर हमें प्रैक्सिस शीर्षक से एक्ट शब्द मिलता है। इनमें से कुछ आपके पास जीवनी के साथ हैं, लेकिन आपके पास यह इतिहास में भी है।

इसका अपवाद स्यूडो-कैलिस्थनीज होगा, जो सिकंदर महान के कम से कम 500 साल बाद लिखा गया था। इसलिए आज विद्वानों का बहुमत दृष्टिकोण यह है कि अधिनियम एक प्रकार का इतिहासलेखन है। यह डेबेलियस द्वारा, कैडबरी द्वारा, एकहार्ट प्लुमेकर द्वारा, एमोरी में ल्यूक टिमोथी जॉनसन द्वारा और मार्टिन हेंगेल द्वारा आयोजित किया गया था।

इतिहास में कुछ विवरण गलत हो सकते हैं, फिर भी, यह ऐतिहासिक घटनाओं को व्यक्त करेगा, एक उपन्यास के विपरीत जहां एक व्यक्ति ने सब कुछ बना दिया। यहाँ कारण हैं कि विद्वान-और ये कई दृष्टिकोणों से विद्वान हैं। ये वे विद्वान नहीं हैं जो कहते हैं—ठीक है, कुछ विद्वान कहेंगे, आप जानते हैं, ल्यूक एक शानदार इतिहासकार था।

कुछ लोग कहेंगे, ठीक है, वह एक बहुत बड़ा इतिहासकार है। लेकिन आज अधिकांश विद्वानों को एहसास है कि ल्यूक इतिहासलेखन लिख रहे हैं। उसके कारण.

एक यह है कि ल्यूक में सेट भाषण शामिल हैं, जो प्राचीन इतिहासलेखन में बहुत बार दिखाई देते हैं। यह प्राचीन इतिहासलेखन की विशेषता थी। जब जोसीफस अपने पुरावशेषों में पुराने नियम के कुछ हिस्सों को फिर से लिखता है, तो वह इसे बेहतर इतिहासलेखन बनाने के लिए भाषण भी जोड़ता है।

कभी-कभी वह कुछ ग्रीको-रोमन भाषण देते हैं। जोसेफस की अलंकारिक इतिहासलेखन में बहुत रुचि है। लेकिन हम इसके बारे में किसी अन्य बिंदु पर अधिक बात करेंगे।

लेकिन आपके पास ये निर्धारित भाषण हैं। किसी ने आपत्ति की है, ठीक है, आप जानते हैं, भाषण सेट करें, आपके उपन्यासों में भी भाषण हैं। हां, आपके पास प्रवचन है, और आपके पास उपन्यासों में बात करने वाले लोग हैं, लेकिन यह इन सेट भाषणों के समान नहीं है, जिस तरह से आप इतिहासलेखन में इतने प्रभावशाली हैं।

हालाँकि वे एक्ट्स में छोटे हैं, क्योंकि एक्ट्स छोटे हैं, यह एक खंड है। ऐतिहासिक प्रस्तावना. अधिकांश विद्वान लूका 1:1-4 की प्रस्तावना को एक ऐतिहासिक प्रस्तावना के रूप में देखते हैं।

लवडे अलेक्जेंडर ने विस्तार से तर्क दिया, ठीक है, यह उस तरह की प्रस्तावना जैसा दिखता है जो आपके पास वैज्ञानिक ग्रंथों में है। लेकिन जब लोगों ने उनकी आलोचना करते हुए कहा, ठीक है, यह कोई वैज्ञानिक ग्रंथ नहीं है, तो उन्होंने जवाब दिया, मैं कभी नहीं कह रही थी कि यह एक वैज्ञानिक ग्रंथ है। मैं सहमत हूँ कि यह प्राचीन इतिहासलेखन का कार्य है, लेकिन अधिक वैज्ञानिक प्रकार का, उस प्रकार का जिसे शायद कोई चिकित्सक या उसके जैसा कोई व्यक्ति लिखेगा।

हमारे पास ज्ञात डेटा के साथ बड़े पैमाने पर पत्राचार है। उपन्यासकारों को इसकी परवाह नहीं थी। उपन्यासकारों ने पीछे जाकर चीजों पर शोध नहीं किया, तब भी जब वे ऐतिहासिक पात्रों के बारे में लिख रहे थे।

कभी-कभी, ल्यूक में सिंक्रनाइज़ेशन शामिल होता है, जो कुलीन इतिहासलेखन की अधिक विशेषता थी। ल्यूक का बाहरी इतिहास के साथ इतना तालमेल नहीं हो सका, क्योंकि, अधिकांश भाग में, उसे जो रिपोर्टें मिलीं, उनमें उसे यह नहीं बताया गया कि इस वर्ष यह हुआ, उस वर्ष यह हुआ। लेकिन उसके पास यह कभी-कभी होता है।

लूका 2:1.2 और लूका 3:1.2 उस समय के शासकों के नाम बताएं जब ये घटनाएँ घटित हो रही थीं। अधिनियम 18.12 में गैलियों का उल्लेख है। यहां तक कि प्रेरितों के काम 11:28, क्लॉडियस के तहत अकाल अवधि के बारे में बात कर रहा है।

इसके अलावा, घटनाओं पर भी ध्यान केंद्रित किया गया है, और आप इसे प्रस्तावना में देखते हैं, जहां यह कहा गया है, अब उन चीजों के बारे में जो हमारे बीच पूरी हुईं। खैर, घटनाओं पर ध्यान

केंद्रित करें, इतिहासलेखन में आपका फोकस इसी पर था। और, आप जानते हैं, इसका विकल्प, ऐतिहासिक उपन्यास, काफी दुर्लभ है।

एडवर्ड मेयर, शायद 20वीं सदी के ग्रीको-रोमन पुरातनता के सबसे प्रसिद्ध इतिहासकार, ने निष्कर्ष निकाला कि ल्यूक एक महान इतिहासकार थे और एक्ट्स, अपनी अधिक प्रतिबंधित सामग्री के बावजूद, ओपुलेबियस, ओलिवी के महानतम इतिहासकारों के समान चरित्र रखते हैं। गंभीर प्रयास। व्यक्तिगत रूप से, मैं ल्यूक को बोलिवियस या लिब्बी के समान श्रेणी में नहीं रखूंगा। मुझे नहीं लगता कि जब तक वे लिख रहे हैं, तब तक वह लिखना चाहते होंगे।

लेकिन, फिर भी, मुद्दा यह है कि ल्यूक इतिहासलेखन लिख रहा था। खैर, किस तरह का इतिहासलेखन? विभिन्न प्रकार के स्रोत थे जिन्हें हम इतिहास के रूप में एक साथ समूहित कर सकते हैं। वंशावली, पौराणिक कथा, भूगोल, जो स्थानीय इतिहास या किसी स्थानीय स्थान का इतिहास था, कालक्रम, जो विश्व इतिहास की घटनाओं को व्यवस्थित करने का प्रयास कर रहा था।

लेकिन आमतौर पर, हम इतिहास के बारे में ही बात कर रहे हैं। इतिहास उचित रूप से ऐतिहासिक घटनाओं से निपट रहा था, और यह इतिहास के विपरीत, कथात्मक रूप में था। और जब मैं ऐतिहासिक घटनाओं के बारे में कहता हूँ, तो मैं पौराणिक कथाओं की तरह होता हूँ, जिन्हें पुनर्नवीनीकरण किया जा सकता है।

कभी-कभी उन्होंने इसके लिए स्रोतों का उपयोग किया, लेकिन वे कई सदियों पहले के लोगों के बारे में बात कर रहे हैं। विषय के आधार पर, कुछ लोगों ने कहा है, ठीक है, ठीक है, यह उचित इतिहास है, लेकिन कैसा इतिहास? क्या यह संस्थागत इतिहास है, प्रारंभिक चर्च की संस्था लिखना? क्या चर्च को एक राजनीतिक इकाई के रूप में देखना राजनीतिक इतिहास है? क्या यह दार्शनिक, जीवनी संबंधी इतिहास है, जो शिक्षकों पर, संतों पर केंद्रित है? हमारे पास उसमें से कुछ है। क्या यह नृवंशविज्ञान, लोगों का इतिहास है? आपके पास कभी-कभी प्राचीन काल में भी ऐसा होता है।

हम इनमें से प्रत्येक प्रकार से अंतर्दृष्टि प्राप्त कर सकते हैं, लेकिन ऐतिहासिक मोनोग्राफ लिखने वाले अधिकांश लोग इसे केवल एक श्रेणी में डालने की कोशिश नहीं कर रहे थे। ये एक प्रकार की कृत्रिम श्रेणियां हैं जिन्हें हम लेकर आए हैं, और इसलिए इनमें से किसी ने भी वास्तव में पकड़ नहीं बनाई है और विद्वानों के बीच आम सहमति नहीं बनाई है। नृवंशविज्ञान इतिहास के संदर्भ में, जब लोगों ने नृवंशविज्ञान इतिहास, लोगों का इतिहास लिखा, तो अक्सर यह एक अल्पसंख्यक समूह था जो इस तरह से हाशिए पर महसूस करता था कि इतिहास आम तौर पर यूनानियों द्वारा लिखा जा रहा था, जिन्होंने इतिहासलेखन के प्रमुख रूप का नेतृत्व किया था। रोमन साम्राज्य।

यूनानियों ने अन्य लोगों को यूनानी चश्मे से देखा। वे जातीय-केंद्रित थे, जैसा कि आमतौर पर लोग होते हैं, और इसलिए वे यूनानी दृष्टिकोण से चीजों में रुचि रखते थे। उनमें से कई अन्य सभ्यताओं को हेय दृष्टि से देखते थे।

हेरोडोटस थोड़ा निष्पक्ष था, लेकिन उनमें से कई गैर-यूनानी सभ्यताओं, गैर-रोमन सभ्यताओं को हेय दृष्टि से देखते थे। तो, आपके पास बेबीलोनी आचा है, जो लिखा गया था। बैरोसस यह दिखाना चाहता था कि बेबीलोनियों का इतिहास महान था।

मनेथा अपने एजिप्टियाका में दिखाना चाहते थे, शायद उस समय इसे एजिप्टियाका कहा जाता होगा, कि मिस्रवासियों का एक महान इतिहास था, जो वास्तव में उन्होंने किया था। और जोसीफस कुछ हद तक अपनी यहूदी पुरावशेषों के साथ यह दिखाने के लिए करता है कि यहूदी लोगों का एक महान इतिहास था, एक ऐसा इतिहास जो ग्रीक सभ्यता से भी बहुत पहले का है। यूनानियों को यह पसंद नहीं आया होगा, लेकिन फिर भी, वह क्षमाप्रार्थी लिख रहा था।

और यह हमें अधिनियमों को देखने के दूसरे तरीके की ओर लाता है, और वह है मकसद के आधार पर। आपके पास अलग-अलग विषय हो सकते हैं, लेकिन मकसद क्या है? इतिहासलेखन लिखने के पीछे प्रेरक शक्तियाँ क्या हैं? खैर, ल्यूक-एक्ट्स का एक संभावित मकसद यह भी है कि हम इन नृवंशविज्ञान संबंधी इतिहासलेखों के लिए पाते हैं, ये नृवंशविज्ञान इतिहास जो एक विशेष लोगों, साम्राज्य के भीतर या साम्राज्य के बाहर एक अल्पसंख्यक समूह के बारे में लिखे गए थे। और ग्रेगरी स्टर्लिंग, जो इस समय येल डिवाइनिटी स्कूल में डीन हैं और उस समय नोट्रे डेम विश्वविद्यालय में थे, ग्रेगरी स्टर्लिंग ने प्राचीन यहूदी इतिहासलेखन के आधार पर, मेरे विचार से बहुत दृढ़ता से, बहुत ठोस तर्क दिया है, यह क्षमाप्रार्थना के साथ लिखा गया था।

और मुझे लगता है कि अधिनियमों के साथ समानताएं बहुत जानकारीपूर्ण हैं। इसलिए, यहूदी लोग इन यहूदी-विरोधी दंगों आदि के लिए ज़िम्मेदार नहीं थे। साथ ही, आप इतिहास को दूसरे दृष्टिकोण से भी वर्गीकृत कर सकते हैं।

मेरा मतलब है, ये परस्पर अनन्य नहीं हैं। आप विषय के आधार पर वर्गीकृत कर सकते हैं, आप मकसद के आधार पर वर्गीकृत कर सकते हैं, या आप रूप के आधार पर वर्गीकृत कर सकते हैं। खैर, रूप में, यह एक मोनोग्राफ है।

यह बहुखंडीय इतिहास नहीं है। एकहार्ट प्लुमाकर और अन्य लोगों ने तर्क दिया है कि यह एक ऐतिहासिक मोनोग्राफ है, जैसे कि भजनकार के ऐतिहासिक मोनोग्राफ। लेकिन, जैसा कि रिचर्ड पेर्वो बताते हैं, यह लोकप्रिय स्तर पर है।

यह संभ्रांत स्तर पर नहीं है। खैर, कभी-कभी गॉस्पेल के साथ, एक ऐसा दौर था जब लोग गॉस्पेल को लोकसाहित्य के विपरीत क्लिनलिटरेचर के रूप में बोल रहे थे, जिससे उनका मतलब था कि गॉस्पेल लोक साहित्य थे। वे उच्च स्तरीय अभिजात्य साहित्य के विपरीत, क्लिनलिटरेचर के विपरीत आम लोगों का साहित्य हैं।

खैर, निश्चित रूप से, ल्यूक-एक्ट्स अभिजात वर्ग नहीं है, लेकिन न ही यह सिर्फ लोक साहित्य है। यह ईसप के जीवन जैसा कुछ नहीं है। तो, आपको दिलचस्प कथा पर ध्यान केंद्रित करना होगा, लेकिन फिर भी यह उसके लिए इतिहास है।

आज, यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप दुनिया में कहां हैं, और कौन सी चीजें आपको पसंद आएंगी, लेकिन सिर्फ कुछ चीजें हैं जिन्हें मैंने सराहा और पढ़ा है, जैसे द हिडिंग प्लेस, द क्रॉस एंड द स्विचब्लेड, जैकी पुलिंगर की कहानी हांग में कोंग, हमारी किताब, इम्पॉसिबल लव, और इस जैसी अन्य चीजें, हमें आवश्यक रूप से एक ही श्रेणी में रखने की कोशिश नहीं कर रही हैं, बल्कि यह कि आपके पास ऐसे काम हो सकते हैं जो आम तौर पर सच हैं, लेकिन उन्हें लोकप्रिय स्तर के तरीके से बताया गया है। और मुझे लगता है कि अधिनियमों की पुस्तक के साथ हमारे पास यही है। क्षमाप्रार्थी नृवंशविज्ञान इतिहास, इस मामले में एक मोनोग्राफ रूप में।

यूनानियों में दूसरों का व्यंग्यचित्र बनाने की प्रवृत्ति होती है, इसलिए अन्य लोग अक्सर ऐसे कार्यों का निर्माण करके प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं जो दिखाते हैं, नहीं, हमारा इतिहास महान है। और जोसेफस ऐसा करता है। कुछ लोगों ने कहा है कि जोसेफस यह दिखाने की कोशिश करता है कि यहूदी धर्म एक धार्मिक धर्म है, एक कानूनी धर्म है।

यह आधिकारिक तौर पर एक कानूनी धर्म नहीं था, लेकिन इसकी आवश्यकता भी नहीं थी। इसकी प्राचीनता और सहनशीलता की मिसाल जो जोसेफस सामने लाता है और इस पर जोर देना पसंद करता है, जबकि शायद कुछ अन्य चीजों का वह उल्लेख नहीं करता है। हम जानते हैं कि ऐसा कभी-कभी होता है क्योंकि क्लॉडियस का एक आदेश था और उसने अलेक्जेंड्रिया में यूनानियों को यहूदी समुदाय पर अत्याचार करना बंद करने के लिए कहा था, उसने यहूदी समुदाय को आंदोलन करना बंद करने के लिए भी कहा था और जोसेफस केवल उस हिस्से की रिपोर्ट करता है जहां उसने यूनानियों को फटकार लगाई थी।

उस समझ में आने योग्य है। वह एक विशेष उद्देश्य के लिए एक विशेष दृष्टिकोण से लिख रहा है। लेकिन किसी भी मामले में, वह अधिनियमों की तरह ही सहिष्णुता को प्राथमिकता देने की अपील करता है।

वह दिखाता है कि चर्च का एक प्राचीन इतिहास और एक प्राचीन विरासत है। खंड 1 पर वापस जाएं, तो आप देख सकते हैं कि यीशु इज़राइल के इतिहास में अंतर्निहित है। ये सभी संकेत हैं, मेरा मतलब है, आपके पास जकर्याह और एलिजाबेथ हैं जो अब्राहम और सारा और कई अन्य चीजों की ओर इशारा करते हैं।

तो, उनकी कहानी इज़राइल की प्राचीन कहानी में चर्च की कहानी को अंतर्निहित करती है। वह पूर्वता, अनुकूल पूर्वता से भी भरा हुआ है कि, आप जानते हैं, चर्च को सताया नहीं जाना चाहिए, उसके मिशन को चुप नहीं कराया जाना चाहिए क्योंकि यह कुछ ऐसा नहीं है जो रोमन कानून के खिलाफ है। पीलातस, यीशु सचमुच निर्दोष था।

सर्जियस पॉलस, गैलीलियो, फेस्टस। फेलिक्स ने पॉल को सिर्फ इसलिए जेल में रखा क्योंकि वह रिश्वत वगैरह चाहता था। तो, एक्ट्स कुछ वैसा ही कर रहा है जैसा जोसेफस क्षमाप्रार्थी नृवंशविज्ञान इतिहास के साथ कर रहा था।

क्षमायाचना के अलावा सिर्फ नृवंशविज्ञान नहीं। वह वास्तव में चर्च का इतिहास नहीं लिख रहा है। वह चर्च के मिशन का इतिहास लिख रहा है।

वह प्रेरितों के कार्य भी नहीं लिख रहा है क्योंकि वह अधिकांश प्रेरितों के साथ अधिक व्यवहार नहीं करता है। आपके पास पीटर, जॉन और पॉल हैं, और फिर जेम्स, प्रभु का भाई, जो बारह में से एक नहीं था। आपके पास कुछ प्राचीन इतिहासलेखन में अलंकारिक परिष्कार है जिसकी मांग अभिजात वर्ग द्वारा की गई थी, विशेषकर द्वितीय परिष्कार के सुनहरे दिनों में और उसके बाद।

दूसरी शताब्दी और उसके बाद, आपके पास ऐसे लोग थे जो न्यू टेस्टामेंट को हेय दृष्टि से देखते थे क्योंकि यह अलंकारिक रूप से पर्याप्त परिष्कृत नहीं था। और निश्चित रूप से, उन्होंने पुराने नियम को और भी अधिक हेय दृष्टि से देखा क्योंकि यह ग्रीक अलंकारिक मानकों द्वारा परिष्कृत नहीं था क्योंकि यह उनके लिए नहीं लिखा गया था। इन इतिहासकारों ने कथा को सुसंगत बनाने के लिए विवरण के समायोजन की अनुमति दी।

उन्होंने जीवंतता पर भी जोर दिया। और जिन तरीकों से इतिहासकार अक्सर जीवंतता पर जोर देते थे उनमें से एक एकफ्रांसिस नामक अभ्यास था, जहां वे किसी चीज़ का विस्तार से वर्णन करते थे। यह पीछे की ओर जाता है... बयानबाजी करने वाले पीछे मुड़कर देखते हैं, विशेषकर होमर की ओर।

होमर एक प्रकार से यूनानियों का आलंकारिक सिद्धांत था, ठीक वैसे ही जैसे पुराना नियम यहूदी लोगों और ईसाई आंदोलन का सिद्धांत था। इसलिए, उन्होंने अजाक्स की ढाल के पूरे लंबे विवरण को देखा, बस आपको हर संभव विवरण दिया। तो, यह अलंकारिक रूप से उन्मुख इतिहासकारों के बीच आम बात थी।

ल्यूक में इसका अभाव है। जब पॉल और सीलास फिलिप्पी को छोड़ रहे थे, तो वह उनके घावों की पीड़ा का वर्णन कर सकता था। वह उन सौ पंखुड़ियों वाले फूलों का वर्णन कर सकता था जिनके लिए फिलिप्पी के आसपास की पहाड़ियाँ प्रसिद्ध थीं।

वह फिलिप्पी के निकट सोने की खदानों का वर्णन कर सकता था। वह स्टुमोन नदी का वर्णन कर सकता था। वह उस प्राचीन शेर की मूर्ति का वर्णन कर सकता था जो उस सड़क के बाहर थी जहाँ से वे निस्संदेह गुज़रे थे।

ल्यूक इनमें से किसी भी चीज़ का वर्णन नहीं करता है। यह उसका हित नहीं है। ल्यूक उससे भी अधिक लोकप्रिय स्तर पर लिख रहा है।

यह काफ़ी लोकप्रिय है, लेकिन साहित्यिक स्तर मार्क से ऊँचा है। साक्षर, लेकिन पॉल जितना परिष्कृत नहीं। अभिजात वर्ग का नहीं, लेकिन पपीरी की तुलना में वह अभिजात वर्ग के ज्यादा करीब था।

अब, ल्यूक के पास भाषण भी हैं। इतिहास में बयानबाजी महत्वपूर्ण थी, विशेष रूप से अभिजात वर्ग के लिए, ल्यूक के लिए कम। आप ल्यूक के कृत्यों की कथात्मक एकजुटता देखते हैं।

यह एक पूरी कहानी है. यह एक साथ फिट बैठता है. गोल्डर, टैलबर्ट और टैनहिल सभी इस पर जोर देते हैं।

1960 के दशक में गोल्डर ने कुछ हद तक समानताएं बढ़ा दीं, लेकिन टैलबर्ट और टैनहिल ने इसे बहुत अधिक शांत, साहित्यिक, कथा-आलोचनात्मक दृष्टिकोण से किया है। और इसलिए, हम देखते हैं कि यह सब एक साथ कैसे फिट बैठता है। हम ल्यूक के कृत्यों में पैटर्न देखते हैं।

अब, पैटर्न का मतलब यह नहीं है कि यह अनैतिहासिक है। इतिहासकारों का मानना था कि प्रोविडेंस ने ये पैटर्न बनाए हैं, और इसलिए वे उन चीजों को उजागर करेंगे जो उन्हें समानताएं लगती हैं। आपके पास हेलिकारनासस के डायोनिसियस में वह है, जो प्रोविडेंस से अपील करता है।

आपके पास यह जोसेफस में है। यह आपके पास रोमन इतिहासकार अप्पियन में है। यह असामान्य नहीं है।

उनका मानना था कि प्रोविडेंस ने उन पैटर्न का निर्माण किया था, और इसलिए आप कह सकते हैं, ठीक है, वे देखने वाले की नज़र में थे, लेकिन वैसे भी, वे उन मामलों में विवरण का आविष्कार नहीं कर रहे थे। समानांतर जीवन. प्लूटार्क हमें बताता है कि वह मौजूदा समानताओं की तलाश करता था।

इसीलिए सब कुछ समानांतर नहीं है, लेकिन जब उन्होंने अपना समानांतर जीवन लिखा तो उन्होंने मौजूदा समानताएं तलाशीं। ऐसा करके उन्होंने मतभेदों को खत्म नहीं किया। जीवनी में, आपके पास प्रशंसा और दोष का तत्व हो सकता है, लेकिन पॉलीबियस के अनुसार, इसे सिर्फ योग्यता के अनुसार सौंपा जाना चाहिए।

यानी, आप सिर्फ कहानियाँ नहीं बना सकते। आपको प्रशंसा और दोष देने के लिए उन कहानियों का उपयोग करना होगा जो वास्तव में मौजूद थीं। मान लीजिए, यह अंतिम संस्कार भाषण से अलग है, जहां आप उस व्यक्ति के बारे में सिर्फ अच्छी बातें कहते हैं।

कुछ इतिहासकारों ने, हालांकि पॉलीबियस ने इस पर द्वेषपूर्वक हमला किया, कुछ इतिहासकार सनसनीखेज थे, और पॉलीबियस ने सनसनीखेजता के जिन उदाहरणों का हवाला दिया, वहां इतिहासकारों ने वास्तव में करुणा का नाटक किया था। यहां तक कि आपके पास एंटसिडस भी है जो पाथोस पर खेल रहा है। लेकिन वह उस बारे में बात कर रहा है जब एक शहर पर विजय प्राप्त की जाती है और लोगों को गुलामों के रूप में बाहर ले जाया जा रहा है।

वह कहते हैं, ठीक है, यह इतिहासकार एक बुरा इतिहासकार है क्योंकि वह सभी महिलाओं के विलाप और रोने आदि का वर्णन करता है। खैर, मेरा अनुमान है कि जब उन्हें गुलामों के रूप में बाहर ले जाया जा रहा था, तो वे शायद विलाप कर रहे थे और रो रहे थे इत्यादि। पॉलीबियस को जो पसंद नहीं है वह उस पर ध्यान केंद्रित करना है।

सभी इतिहासकार उनसे सहमत नहीं थे। ल्यूक के पास कुछ करुणा है, लेकिन उसके पास बहुत कुछ नहीं है। वास्तव में, उसके पास टैसीटस से कम हो सकता है।

और उसके पास जो करुणा है वह घटनाओं का आविष्कार करने जैसा नहीं है। यह पॉल के जाने पर लोगों के रोने जैसा है, जो दर्शाता है कि वे पॉल से कितना प्यार करते हैं। संभ्रांत इतिहासकार दृश्यों के बारे में विस्तार से बताएंगे।

जैसा कि हमने बताया, वह ल्यूक-एक्ट्स में नहीं है। जोसेफस ऐसा करता है। किसी पुस्तक को उन लोगों के बीच बेचने के लिए इस प्रकार की चीजों को आवश्यक माना जाता था जो इसे खरीदने का खर्च उठा सकते थे।

लेकिन अधिक लोकप्रिय स्तर पर, वे इन सभी विशिष्ट अलंकारिक तकनीकों में रुचि नहीं रखते थे, बल्कि वे अच्छी कहानी कहने में रुचि रखते थे। और फिर, आप चीजों का आविष्कार किए बिना भी ऐसा कर सकते हैं। क्या इतिहासकारों के पास प्राचीन पूर्वाग्रह थे? खैर, जो हम पहले ही कह चुके हैं, उससे आप जानते हैं कि उन्होंने ऐसा किया था।

प्राचीन इतिहासकारों में पूर्वाग्रह थे, या जिसे विद्वान प्रवृत्ति कहते हैं। उनकी कुछ प्रवृत्तियाँ और कुछ निश्चित दृष्टिकोण थे। जरूरी नहीं कि, जब हम इस तरह से पूर्वाग्रह शब्द का उपयोग करते हैं, तो जरूरी नहीं कि नकारात्मक हो, लेकिन उनके कुछ निश्चित दृष्टिकोण होते हैं।

आधुनिक इतिहासकारों की भी यही बात है। उत्तरआधुनिकतावादी इसे इंगित करना पसंद करते हैं। हर कोई एक परिप्रेक्ष्य से लिखता है, जिसके बारे में गैर-उत्तरआधुनिकतावादी कहेंगे कि चीजों को विकृत करना उचित नहीं है।

लेकिन किसी भी स्थिति में, मैं उस बहस में नहीं पड़ूँगा। लेकिन आप लिंकन या चर्चिल की जीवनियों की तुलना कर सकते हैं। कुछ अधिक सकारात्मक हैं; कुछ अधिक नकारात्मक हैं।

साथ ही, एक स्पष्ट फोकस भी हो सकता है। आप चर्च के इतिहास के बारे में लिख सकते हैं। इसका मतलब यह नहीं है कि आप बातें बना रहे हैं।

इसका मतलब है कि आपका ध्यान चर्च के इतिहास पर है। हालाँकि, पश्चिमी इतिहासकारों ने पश्चिमी चर्च के इतिहास पर ध्यान केंद्रित किया है, और हाल ही में, विद्वान इशारा कर रहे हैं, वास्तव में, पूर्वी अफ्रीका में चर्च के इतिहास के बारे में क्या? एशिया और कुछ अन्य स्थानों में चर्च के इतिहास के बारे में क्या? दरअसल, वो बातें अब ज्यादा सामने आ रही हैं। तो, एक निश्चित दृष्टिकोण था जिसके तहत लोग लिख रहे थे, कुछ निश्चित रुचियाँ थीं जो यह निर्धारित करती थीं कि वे मुख्य रूप से क्या कवर करते हैं।

लेकिन चर्च का इतिहास, राजनीतिक इतिहास, महिलाओं का इतिहास, इसलिए आपकी रुचियाँ भी आपका ध्यान केंद्रित करेंगी, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि यह इतिहास नहीं है। लेकिन प्राचीन काल में यह अधिक स्पष्ट था। कभी-कभी वे अलग-अलग स्पष्ट आख्यान देते थे।

खैर, इस व्यक्ति ने ऐसा इसलिए किया क्योंकि वे बेवकूफ हैं। कभी-कभी आपके मन में बहुत स्पष्ट राष्ट्रवादी पूर्वाग्रह होंगे। आपके पास बहुत सारे लोग हैं जो रोमन समर्थक प्रवृत्ति से लिख रहे हैं, और यही एक कारण हो सकता है कि वे इतिहास बचे हुए हैं।

प्लूटार्क वास्तव में हेरोडोटस को पसंद नहीं करता था। उनके पास हेरोडोटस के द्वेष पर एक संपूर्ण निबंध था। हेरोडोटस के विरुद्ध उसके पास क्या था? हेरोडोटस ने बोईओतिया, जहां से प्लूटार्क था, के बारे में कुछ नकारात्मक कहा।

तुम्हें पता है, तुम मेरे शहर के साथ खिलवाड़ नहीं करते। यदि आप मेरे शहर के बारे में कुछ बुरा लिखेंगे तो मैं आपके बारे में कुछ बुरा लिखूंगा। इसलिए, प्लूटार्क ने हेरोडोटस को आड़े हाथों लिया और उसे दुर्भावनापूर्ण कहा।

लोगों में विभिन्न राष्ट्रवादी पूर्वाग्रह थे, हालाँकि कभी-कभी उनमें से कुछ ने इतने निष्पक्षता से लिखा कि आज इतिहासकार इस बात पर बहस करते हैं कि वे वास्तव में किस पक्ष में थे। नैतिक पाठ। जिम्मेदार इतिहासकारों का मानना था कि आपने इतिहास को यूँ ही सामने नहीं रख दिया और लोगों को उसमें जो चाहें करने दिया।

आपने उन्हें कुछ दिशा दी. वे जानते थे कि लोग भाषणों में इन ऐतिहासिक उदाहरणों का उपयोग करने जा रहे हैं। वे उनका उपयोग राजनीतिक तर्क-वितर्क आदि में करते थे।

तो, सवाल यह था कि यदि लोग इनका उपयोग करने जा रहे हैं, तो हम यह सुनिश्चित करना चाहते हैं कि वे इनका सही उपयोग करें। अक्सर अपने काम की शुरुआत में, वे कहते थे, मैं इसे नैतिक उदाहरण प्रदान करने के लिए लिख रहा हूँ ताकि जब हम वर्तमान में लोगों को समझाने की कोशिश करें तो आप अतीत से अच्छे और बुरे उदाहरण ढूँढ सकें। अब, वे आपको हमेशा यह नहीं बताते थे कि कौन से उदाहरण अच्छे थे और कौन से उदाहरण बुरे थे क्योंकि कभी-कभी संस्कृति में इसे हल्के में लिया जाता था।

लेकिन आपके पास वह भी सुसमाचारों में, अधिनियमों की पुस्तक में है। लोगों के व्यवहार से आपके अंदर कुछ नैतिकताएं संचारित होती हैं। आपके पास कुछ ऐसे समूह हैं जो सकारात्मक या नकारात्मक रूप से केंद्रित हैं।

किसी उद्देश्य के लिए तथ्यों का चयन तथ्यों को गढ़ने जैसा नहीं है। यह ठीक उसी तरह है जिस तरह से इतिहास लिखा जाता है और निश्चित रूप से जिस तरह से प्राचीन इतिहासलेखन लिखा गया था। धार्मिक दृष्टिकोण भी सामने आये।

इतिहासकार इतिहास में दैवीय हाथ की तलाश करते थे। उन्होंने इतिहास में पैटर्न की तलाश की, जैसा कि हमने बताया है, और इस प्रकार समानताएं भी। और यह सिर्फ यूनानी इतिहासकार नहीं हैं।

मेरा मतलब है, आप 1 सैमुअल, अध्याय 1 को देखते हैं, और आपको हत्रा और एली के बीच तुलना मिलती है। आपके पास वह तुलना है जो अगले अध्याय में सैमुअल और एली के बेटे, होप्पी और फिनीस के बीच चलती है। आपके पास शाऊल और दाऊद के बीच तुलना है।

यह इतिहास लेखन के बहुत से तरीकों की विशेषता थी और इसे ग्रीक भाषा में औपचारिक रूप दिया गया था। भाग्यशाली प्रदान। हैलिकार्नासस और जोसेफस के डायोनिसियस ने इतिहास में इसकी तलाश की।

उन्होंने उल्लेख किया कि यह प्रोविडेंस द्वारा किया गया था। यहूदी लेखक, जब वे बाइबिल के इतिहास को अद्यतन कर रहे थे, जैसे कि जुबलीज़ की किताब, तो उनके पास विशेष धार्मिक जोर था, भले ही जुबलीज़ उस जानकारी के काफी करीब है जो हमारे पास उत्पत्ति में है, इसे कुछ बाद की यहूदी परंपरा के साथ बढ़ाया गया है। जोसीफ़स भी, वह उन्हीं कहानियों का उपयोग कर रहा है, हालाँकि आप उसका झुकाव देख सकते हैं।

कभी-कभी उनका झुकाव उचित जीवनी वर्णन तकनीकों का उपयोग करके हेलेनिस्टिक दर्शकों के लिए इसे आकर्षक बनाने का होता है। खैर, प्राचीन इतिहासलेखन में सटीकता के बारे में क्या? इतिहासकार ने इसमें कुछ भिन्नता दिखाई। टैसिटस, थ्यूसीडाइड्स या पॉलीबियस हेरोडोटस, भूगोलवेत्ता स्ट्रैबो या प्लूटार्क की तुलना में अधिक सटीक थे।

जोसेफस जनसंख्या अनुमान और दूरियों के मामले में अविश्वसनीय है, लेकिन फिर भी, उसने शायद लोगों की गिनती नहीं की, न ही हम उम्मीद करते हैं कि वह दूरियों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक तय करेगा। उसने वास्तव में उन्हें मापा नहीं था। लेकिन छोटी चीज़ों के लिए जिन्हें वह माप सकता था, जैसे खंभे, जैसे स्मारक, जैसे कैसरिया मैरिटिमा में बंदरगाह में वास्तुकला, वह अक्सर उन मापों में काफी सटीक था।

वह अधिकांश वास्तुशिल्प डेटा पर विश्वसनीय था, और जहां तक हम बता सकते हैं, अधिकांश घटनाओं पर। कभी-कभी वह चीज़ें भूल जाता था। हेरोदेस एंटीपास को कहाँ निर्वासित किया गया था? उसे गॉल में निर्वासित कर दिया गया था, लेकिन जोसेफस के अलावा किसी अन्य स्थान पर, उसे कहीं और निर्वासित कर दिया गया है।

खैर, कम से कम हम जानते हैं कि उसे निर्वासित कर दिया गया था। लेकिन जोसेफस, प्राचीन इतिहासकारों में सबसे अधिक सावधान नहीं है, लेकिन कभी-कभी उसकी जानकारी इतनी सटीक होती है कि पुरातत्वविद् इससे आश्चर्यचकित रह जाते हैं। विवरण के मामले में इतिहासकारों के पास विस्तृत जानकारी थी।

उन्हें कहानी का अधिकांश भाग ठीक से प्राप्त करना था, बशर्ते उनके स्रोत सटीक हों। उन्होंने ऐतिहासिक सेटिंग के साथ सुसंगति की कसौटी का उपयोग किया। वे घटनाओं के समय के करीब के लेखकों को प्राथमिकता देते थे, विशेषकर चश्मदीदों को।

उनका लक्ष्य वस्तुनिष्ठता था, और वे अपने डेटा को संभालने के तरीके में बहुत आलोचनात्मक हो सकते थे ताकि एक बिंदु पर, मेरा मानना है कि यह शायद थ्यूसीडाइड्स था, जो महान आचैन

साम्राज्य की कहानियों की आलोचना करता है, होमर में आपके पास जो कहानियां हैं, क्योंकि यदि आप माइसीने वापस जाएं, वहां सिर्फ खंडहर हैं, और ऐसा नहीं लगता कि यह कोई बहुत बड़ी जगह थी। खैर, खुदाई से पता चला है कि यह जितना उसने सोचा था उससे कहीं अधिक बड़ा था, लेकिन वह एक आलोचनात्मक इतिहासकार था। वह अपने पास उपलब्ध डेटा को देखने की कोशिश कर रहा था, और आज हमारे पास अधिक डेटा उपलब्ध है, और वास्तव में, हम यह नहीं कह रहे हैं कि इलियड या ओडिसी ऐतिहासिक हैं, लेकिन कुछ चीजें जो उन्होंने पहले ही मान ली थीं, वे वास्तव में सच हैं। शायद थ्यूसीडाइड्स ने जितना सोचा था उससे कहीं अधिक कुछ जानकारी पर वापस जाएँ।

वस्तुनिष्ठता लक्ष्य थी, और कभी-कभी इसे इस हद तक हासिल किया जाता था कि विद्वान इस बात पर बहस करते थे कि उदाहरण के लिए, अपने ऐतिहासिक मोनोग्राफ में सैलस्ट का झुकाव किस ओर था। कालक्रम हमेशा उपलब्ध नहीं था। आपके पास पॉलीबियस और थ्यूसीडाइड्स और टैसीटस में कालक्रम का उपयोग किया गया है क्योंकि उनके पास सैन्य स्रोत उपलब्ध हैं।

उनके पास ऐसे इतिहास हैं जो इसलिए लिखे गए क्योंकि वे इसी तरह की चीज़ के बारे में लिख रहे हैं। आपके पास मौखिक स्रोतों के साथ ऐसा नहीं है। लोग हमेशा आपको यह बताने में सक्षम नहीं होंगे कि यह इस तारीख को हुआ था और यह इस तारीख को हुआ था, और आपके पास हमेशा चीजें सटीक अनुक्रम में भी नहीं हो सकती हैं, और इसकी उम्मीद नहीं की गई थी।

निश्चय ही, जीवनी में इसकी अपेक्षा नहीं थी। इतिहासलेखन में आपको इसे जितना संभव हो उतना करीब लाना था, लेकिन वहां भी कभी-कभी उन्हें समझौता करना पड़ता था क्योंकि आप एक वर्ष से अगले वर्ष तक भौगोलिक रूप से कुछ का पालन करते हैं, भले ही इस साइट पर इन बाद की घटनाओं से पहले यहां कुछ अन्य घटनाएं हो रही हों, या क्या आप यहाँ आ जाते हैं क्योंकि यह उसी वर्ष हुआ था और फिर भौगोलिक दृष्टि से वापस आ जाते हैं? और अलग-अलग इतिहासकारों के पास इसके लिए अलग-अलग तकनीकें थीं, और उनमें से कुछ ने दूसरों की कुछ तकनीकों की आलोचना की। स्रोतों का उपयोग।

शायद ही कभी इतिहासकारों के पास सर्वज्ञ कथावाचक होते थे। आमतौर पर, उन्होंने अलग-अलग स्रोतों का हवाला दिया। कभी-कभी आपके पास एक तरफ सात और दूसरी तरफ चार होंगे, और इतिहासकार कहेगा, सात ने ऐसा कहा, लेकिन अधिकांश इतिहासकार ऐसा कहते हैं, और वे चार का हवाला देंगे, जिससे आपको पता चल जाएगा कि सात से अधिक थे, लेकिन उन्होंने आपको उनमें से कुछ के नाम ही बताए हैं।

अपवाद. उन्होंने हमेशा अलग-अलग स्रोतों का हवाला नहीं दिया, लेकिन उन्होंने उन्हें विशेष रूप से वहां उद्धृत किया जहां वे असहमत थे। इसलिए, जब आप हाल के स्रोतों के बारे में बात कर रहे हैं, तो उनके अपने स्रोतों का नाम बताने की संभावना कम थी क्योंकि उनके बीच इतनी असहमति नहीं थी।

एरियन के मामले में, एरियन सिकंदर महान की बहुत सम्मानित जीवनी लिखता है, लेकिन एरियन पहली शताब्दी के अंत में, दूसरी शताब्दी की शुरुआत में लिख रहा है, और सिकंदर

महान की मृत्यु 323 ईसा पूर्व में हुई, वह 356 से 323 ईसा पूर्व तक जीवित रहा, इसलिए सदियाँ बीत गईं, लेकिन इस मामले में, एरियन के बहुत सारे काम हैं जो आज हमसे खो गए हैं। उनके पास सिकंदर महान के बारे में कई प्रारंभिक कार्य थे, और वह उन पर काम कर सकते थे, और इसलिए विद्वान वास्तव में इसका सम्मान करते हैं क्योंकि उनके पास काम करने के लिए शुरुआती स्रोत थे। लेकिन कभी-कभी वे स्रोत एक-दूसरे का खंडन करते थे, और उन्हें कहना पड़ता था, ठीक है, यहां अलग-अलग विचार हैं।

आम तौर पर यदि आप पहली या दूसरी पीढ़ी में लिख रहे हैं, तो गवाहों के बीच उतना विरोधाभास नहीं होता है। आपके पास थोड़ा सा हो सकता है। लेकिन ल्यूक का मामला क्या है? खैर, ल्यूक अपने उन स्रोतों को लेकर बहुत सावधानी से काम कर रहा था जो गॉस्पेल में उसके लिए उपलब्ध थे।

हम कैसे जानते हैं? बस एक बात के लिए ल्यूक और मार्क की तुलना करें। प्राचीन इतिहासों पर काम करते हुए मेरा अवलोकन यह है कि एक ही कालखंड को कवर करने वाले प्राचीन इतिहासकारों ने उन्हीं घटनाओं को दोबारा बताया। वे अक्सर विस्तृत दृश्यों को भरते हैं जहां उनके पास जानकारी तक पहुंच की कमी होती है, खासकर जहां आपके पास निजी दृश्य होते हैं और कोई भी व्यक्ति जीवित नहीं बचा होता है।

वे सभी इससे मर गये। जोसेफस कभी-कभी ऐसा करता है। यहां तक कि टैसीटस भी अवसर पर ऐसा करता है।

लेकिन पदार्थ सही होना चाहिए। लेकिन उन्होंने अच्छी कहानी कहने के लिए दृश्यों को गोल कर दिया। इसलिए, जिस तरह से लोग प्राचीन इतिहासलेखन के प्रति दृष्टिकोण रखते हैं उसमें हमें कुछ खतरे हैं।

एक यह मान लेना है कि प्राचीन इतिहासलेखन आधुनिक इतिहासलेखन के समान है। तो, आप इसे आधुनिक नियमों के आधार पर आंके। आप प्राचीन इतिहासलेखन को एक ऐसी शैली के आधार पर आंक रहे हैं जो तकनीकी रूप से अभी तक अस्तित्व में नहीं थी, अर्थात् आधुनिक इतिहासलेखन।

और इसलिए, आपके पास अति-रूढ़िवादी हैं और आपके पास कुछ संदेहवादी शिकायत कर रहे हैं, ठीक है, आप जानते हैं, हमारे बहुत सख्त मानकों के अनुसार, हम इसमें किसी भी विश्वसनीयता को खत्म करने जा रहे हैं। लेकिन प्राचीन इतिहासकार आम तौर पर सार और घटनाओं में सटीकता को महत्व देते हैं, लेकिन जरूरी नहीं कि बातचीत जैसे सभी विस्तृत विवरणों में आपको बिल्कुल सटीक शब्द या ऐसा कुछ भी मिले। दूसरा खतरा यह मान लेना है कि प्राचीन इतिहासलेखन का ऐतिहासिक जानकारी से कोई लेना-देना नहीं था।

मेरा मतलब है, आधुनिक इतिहासलेखन प्राचीन इतिहासलेखन से विकसित हुआ है। आज हम जिन नियमों का उपयोग करते हैं उनमें से कई नियम पॉलीबियस द्वारा बनाए गए थे, जिन्होंने नया नियम लिखे जाने से पहले लिखा था। तो, यह मानते हुए, प्राचीन इतिहासलेखन को ऐतिहासिक

जानकारी से अलग करने की कोशिश करें और कहें, ठीक है, यह वस्तुतः एक उपन्यास के समान है, जो स्नान के पानी के साथ बच्चे को बाहर फेंक रहा है।

इतिहास में उपन्यास प्राचीन काल में काफी विशिष्ट शैली थे। ल्यूकियन ने बताया कि अच्छे जीवनीकार चापलूसी से बचते हैं। यह घटनाओं को गलत साबित करता है और केवल बुरे इतिहासकार ही डेटा का आविष्कार करते हैं।

प्लिनी द यंगर, ये दोनों दूसरी सदी में लिख रहे हैं, हालाँकि प्लिनी दूसरी सदी के पहले लिख रहे हैं। प्लिनी द यंगर का कहना है कि इतिहास के बारे में जो विशिष्ट है वह सटीक तथ्यों के प्रति उसकी चिंता है। साथ ही, प्लिनी ने कहा कि इतिहास का प्राथमिक लक्ष्य सत्य और सटीकता है, न कि अलंकारिक प्रदर्शन।

कभी-कभी लोग कहते हैं, ठीक है, बेशक, इतिहासकार आपको बताएंगे कि वे सटीक लिखना चाहते थे, लेकिन नहीं, यह सिर्फ एक परंपरा थी। उनका वास्तव में यह मतलब नहीं था। प्लिनी कोई इतिहासकार नहीं है।

प्लिनी एक वक्ता और राजनेता हैं, लेकिन वह मानते हैं कि इतिहास सटीक होना चाहिए। और आप बयानबाजी का उपयोग कर सकते हैं बशर्ते आपका आधार तथ्य हो। उन्होंने अपने दोस्तों टैसीटस और सुएटोनियस को लिखा, जो इतिहासकार थे।

सुएटोनियस अधिक जीवनी लेखक थे। लेकिन वह टैसीटस को लिखते हैं, और वह कहते हैं, अब मुझे पता है कि आप रोमन साम्राज्य का इतिहास लिख रहे हैं, और मैं यह सुनिश्चित करना चाहता हूँ कि आप इस बहुत महत्वपूर्ण अभियोजन को न छोड़ें, यह बहुत ही महत्वपूर्ण मामला जिस पर मैंने मुकदमा चलाया था। हम नहीं जानते कि टैसीटस ने उसकी बात सुनी या नहीं, क्योंकि टैसीटस का वह विशेष भाग गायब है, लेकिन टैसीटस द्वारा आमतौर पर उपयोग किए जाने वाले मानकों के अनुसार यह बमुश्किल दोबारा गिनने लायक था।

हालाँकि, प्लिनी जो कहती है, अब मुझे पता है कि आप केवल सटीक सत्य को ही शामिल कर सकते हैं, लेकिन यह सटीक सत्य है। उन्होंने अपने पिता का भी विवरण दिया, क्षमा करें, उनके पिता का नहीं, उनके चाचा प्लिनी द एल्डर का, जिनकी वेसुवियस के विस्फोट से मृत्यु हो गई थी। उन्होंने प्राकृतिक इतिहास लिखा।

इसलिए, उन्हें प्रकृति आदि के बारे में बहुत सारी विश्वकोषीय जानकारी में बहुत रुचि थी। और जब बाकी सभी लोग पोम्पेई से भाग रहे थे, तो वह वहाँ जाकर क्या हो रहा था, इसके बारे में और अधिक जानना चाहता था, और यही उसका अंत था। लेकिन कुछ जीवित बचे लोग थे जो जो कुछ हुआ उसके बारे में बात करने में सक्षम थे, और प्लिनी द यंगर ने टैसीटस को बहुत खुशी से वह जानकारी प्रदान की।

लेकिन यह सच्ची जानकारी है, और उन्होंने कहा, आप जानते हैं, यह सच्ची जानकारी होगी। अरस्तू, लिखते हुए, वह सिकंदर महान का शिक्षक था, जो बहुत पहले प्लेटो का छात्र था। अरस्तू

के अनुसार, कविता और इतिहास के बीच अंतर उनके रूप में नहीं है, क्योंकि कोई भी इतिहास को पद्य में लिख सकता है, और यह बाद में साबित हुआ, बल्कि उनकी सामग्री में है।

इतिहास को इस बात से निपटना चाहिए कि क्या हुआ, न कि केवल इस बात से कि क्या हो सकता है। इसलिए, इस बात पर भारी जोर दिया गया कि इतिहास का संबंध वास्तविक घटनाओं से माना जाता है। और जो लोग आज इन्हें मिलाते हैं, उपन्यास और इतिहासलेखन, मूल रूप से कुछ ऐतिहासिक उपन्यास या कुछ बहुत खराब तरीके से लिखे गए इतिहास लेते हैं, लेकिन वे, फिर से, उनमें से बहुत ही कम संख्या में थे।

आपके पास अभी भी दोनों शैलियों की मुख्य धारा बहुत अलग है। आलोचनात्मक इतिहासलेखन, आधुनिक जातीय केंद्रित पूर्वाग्रह के विपरीत। पूर्वजों ने आलोचनात्मक इतिहासलेखन का अभ्यास किया था।

जैसा कि मैंने कहा, अधिकांश आधुनिक अभ्यास पॉलीबियस से था, क्योंकि वह टिमियस की आलोचना कर रहा था, शायद सिर्फ इसलिए क्योंकि टिमियस एक प्रतिद्वंद्वी था और वह चाहता था कि उसका अपना इतिहास जीवित रहे, न कि टिमियस का, और वह इसमें सफल हुआ, बहुत विनम्रता से नहीं। इतिहासकार अक्सर उनके स्रोतों पर सवाल उठाते थे। वे लेखकों के पूर्वाग्रहों की जाँच करेंगे।

उन्होंने भूगोल, खंडहरों, आंतरिक स्थिरता आदि के साथ एकरूपता का परीक्षण किया। जिन स्रोतों को उन्होंने प्राथमिकता दी वे पहले के स्रोत थे, घटनाओं के निकटतम, विशेषकर प्रत्यक्षदर्शी। वे उन लोगों को प्राथमिकता देते थे जिनमें पक्षपात करने की सबसे कम संभावना होती थी।

उन्होंने कई स्रोतों की तुलना की। दूसरे शब्दों में, प्राचीन इतिहासकारों को तथ्यों को स्पष्ट करने की परवाह थी। यहां तक कि जोसेफस भी।

जोसेफस ने बाइबिल की कहानियों को फिर से लिखा। कभी-कभी, जैसा कि मैंने बताया, वह इन आख्यानों के लिए नए भाषण तैयार करते हैं। वह अलंकारिक रूप से विस्तार से बताते हैं।

वह सुनहरे बछड़े को छोड़ देता है। आप जानते हैं, मेरा मतलब है, आप सुनहरे बछड़े के लिए कुछ क्षमा याचना को समझ सकते हैं, लेकिन नहीं, वह इसके बारे में बात भी नहीं करना चाहता है। लेकिन उन्होंने बाइबिल की कहानियों के मूल सार को बरकरार रखा है।

और फिर, उनके अपने काल में, पुरातत्व उनकी बहुत विस्तार से पुष्टि करता है। इसलिए, जोसेफस सबसे सटीक इतिहासकार नहीं था। वह उनमें से अधिक लापरवाहों में से एक था।

और फिर भी, हमें जोसेफस से बहुत सारी जानकारी मिलती है, और यदि आपको उसकी बात माननी है या यह मान लेना है कि वह गलत है, तो मैं, उसकी बात मानने के लिए अधिक उपयुक्त होगा जब तक कि मेरे पास ऐसा न करने का कोई अच्छा कारण न हो। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि प्राचीन घटनाओं के इतिहासकारों ने स्वीकार किया कि प्राचीन अतीत का अधिकांश भाग

कल्पना में डूबा हुआ था। लेकिन जब इतिहासकार हाल की घटनाओं के बारे में लिख रहे थे, तो उन्होंने प्रत्यक्षदर्शियों की गवाही को महत्व दिया।

उन्होंने मौखिक रिपोर्टें एकत्रित कीं, ठीक वैसे ही जैसे ल्यूक 1.2 में ल्यूक चश्मदीदों के बारे में बात करता है। हम सुएटोनियस और अन्य लोगों को जानते हैं, उन्होंने गवाहों से सलाह ली थी। कभी-कभी वे उनका उल्लेख करते हैं, जिन गवाहों से उन्होंने परामर्श किया था। कभी-कभी वे उन कार्यों का उल्लेख करते हैं जो उन घटनाओं के लगभग तुरंत बाद लिखे गए थे जिन पर वे निर्भर थे।

उन्होंने पहचाना कि उन्हें घटनाओं पर विश्वसनीय होना होगा। क्या कृत्य मनोरंजक हैं? हाँ। लेकिन इतिहासकारों ने मनोरंजक तरीकों से लिखने की कोशिश की।

फिर से, उपन्यास और इतिहास के बीच अंतर यह नहीं था कि केवल मनोरंजन करना चाहता था, बल्कि सूचित करना भी चाहता था। पूर्वजों का मानना था कि सत्य का उपयोग नैतिक पाठ पढ़ाने और मनोरंजन के लिए भी किया जा सकता है। आप ल्यूक के स्वयं के मामले का परीक्षण करें।

ल्यूक की विधि क्या थी? खैर, ल्यूक वास्तव में इसे अपने पहले खंड की प्रस्तावना में हमारे लिए उपलब्ध कराता है। और हम मार्क के साथ ल्यूक के कार्यों की तुलना करके भी उसका परीक्षण कर सकते हैं। तो, ल्यूक की विधि उसकी प्रस्तावना में है।

एक प्रस्तावना में यह घोषणा की जानी थी कि आगे क्या होना है। ल्यूक की वादा की गई सामग्री, ल्यूक 1:1-3, हमारे बीच पूरी हुई चीजों की एक व्यवस्थित कहानी की बात करती है। और थियोफिलस ने ऐसी घटनाओं के बारे में क्या सीखा था, इसकी पुष्टि करने के लिए वह श्लोक 4 के अनुसार लिखता है।

तो ल्यूक हमें जो बता रहा है वह यह है कि वह ऐतिहासिक जानकारी के बारे में लिखने जा रहा है और वह उन चीजों की पुष्टि करने के लिए इसके बारे में लिख रहा है जिनके बारे में थियोफिलस पहले से ही जानता था। जो मैं जल्द ही कवर करने जा रहा हूँ, हम इस प्रस्तावना को कुछ अधिक विस्तार से देखेंगे, ल्यूक 1:1-4। यह हमें ल्यूक के लिए उपलब्ध स्रोतों के बारे में बहुत कुछ बताता है। लिखित स्रोत, मौखिक स्रोत, प्रत्यक्षदर्शियों के पास वापस जा रहे हैं।

ल्यूक को पूरी जानकारी है या वह अपनी जांच से इसकी पुष्टि करता है, श्लोक 3। और साथ ही, ल्यूक हेराफेरी नहीं कर सका। ल्यूक केवल बातें नहीं बना सकता था, निश्चित रूप से बहुत बड़े स्तर पर नहीं, क्योंकि सामग्री प्रारंभिक चर्च में पहले से ही ज्ञात थी और वह केवल उस बात की पुष्टि कर रहा था जो उसके दर्शकों के सदस्यों को पहले से ही पता था। अगले सत्र में हम इनमें से प्रत्येक बिंदु पर विस्तार से विचार करेंगे।

यह एक्ट्स की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. क्रेग कीनर हैं। यह सत्र 2, शैली और इतिहासलेखन है।